गाङ्गेयवसनधर

रागम्: हमीर् कल्याणि ताळम्: आदि

(श्री स्वाति तिरुनाळ् विरचित)

पल्लवि

गाङ्गेयवसनधर पद्मनाभ
मामव नवजलदाङ्ग

अनुपल्लवि

रङ्गस्थल फणिफण
रामणीयक गुणालय मुरहर

चरणम्

पादविनम्रनिकर सुगमांबुज-

गर्भदळेक्षण पालितसुरगण

खग तुरग वेदनिकर बहुविध-

वन्दनीय दुरितापह सुचरित-

पदयुगळ भजनमयि दिनमनुदिश
रमानायक सुललाम परम ॥ १ ॥

पावन मत्तकरि समगम

सुमसायक मदपाटन रुचियुत-

तनुसुभग भावशमल विमथन

भारतीश घनगर्व विनाशन

कुवलय पतिसम विलसित सुवदन
सदा सौख्यमयि मुदा देहि वर ॥ २ ॥

वारय पापमखिलमयि मामित

मोहन मृदुहास पातविजय खल-

फणि विहग परिलस मम हृदि

पन्नगेन्द्रशयन साधुजनावन

सरसिजभव वल विदळन परिणुत-
कृपावास भवे क्षिप मा विषये ॥ ३ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇